



---

.. paramAtmAShTakam ..

॥ परमात्माष्टकम् ॥

Sanskrit Document Information

---

Text title : paramAtmAShTakam

File name : paramAtmAShTakam.itx

Category : aShTaka

Location : doc\_shiva

Author : yogAnandatIrtha

Language : Sanskrit

Subject : philosophy/hinduism/religion

Proofread by : PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

Description-comments : Brihatstotraratnakara 1, Narayana Ram Acharya, Nirnayasagar, stotrasankhyaA 211

Latest update : February 28, 2017

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

---

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

February 28, 2017

*sanskritdocuments.org*

---

## ॥ परमात्माष्टकम् ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

परमात्मैस्तव प्राप्तौ कुशलोऽस्मि न संशयः ।

तथापि मे मनो दुष्टं भोगेषु रमते सदा ॥ १ ॥

यदा यदा तु वैराग्यं भोगेभ्यश्च करोम्यहम् ।

तदैव मे मनो मूढं पुनर्भोगेषु गच्छति ॥ २ ॥

भोगान्भुक्त्वा मुदं याति मनो मे चञ्चलं प्रभो ।

तव स्मृतिर्यदाऽऽयाति तदा भाति बहिर्मुखम् ॥ ३ ॥

प्रत्यहं शास्त्रनिचयं चिन्तयामि समाहितः ।

तथापि मे मनो मूढं त्यक्त्वा त्वां भोगमिच्छति ॥ ४ ॥

शोकमोहौ मानमदौ तवाङ्नाद्भवन्ति वै ।

यदा बुद्धिपथं यासि यान्ति ते विलयं तदा ॥ ५ ॥

कृपां कुरु तथा नाथ त्वयि चित्तं स्थिरं यथा ।

मम स्याज्ज्ञानसंयुक्तं तव ध्यानपरायणम् ॥ ६ ॥

मायया ते विमूढोऽस्मि न पश्यामि हिताहितम् ।

संसारपारपाथोधौ पतितं मां समुद्धर ॥ ७ ॥

परमात्मैस्त्वयि सदा मम स्यान्निश्चला मतिः ।

संसारदुःखगहनात्वं सदा रक्षको मम ॥ ८ ॥

परमात्मन इदं स्तोत्रं मोहविच्छेदकारकम् ।

ज्ञानदं च भवेन्नृणां योगानन्देन निर्मितम् ॥ ९ ॥


इति श्रीयोगानन्दतीर्थविरचितं परमात्माष्टकं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

॥ परमात्माष्टकम् ॥

---

on February 28, 2017

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

